IMPACT FACTOR
6.10

ISSN 2229-4406

UGC Approved International Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS

URA

UGC APPROVED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue - XXI, Vol. V
Year - XI (Half Yearly)
Sept. 2020 To Feb. 2021

Editorial Office :
'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 -241913
9423346913 / 9503814000
9637935252 / 7276301000

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com

Publisher :
Jyotichandra Publication
Latur, Dist. Latur - 413531. (MS)

Price : ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Professor & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya,
Latur, Dist. Latur(M.S.)India.

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Rajendra R. Gavhale
Head, Dept. of Economics,
G. S. Mahavidyalaya,
Khamgaon, Dist. Buldhana

Dr. E. Siva Nagi Reddy
Director, National Institue
of Hospitality & Tourism Management,
Hyderabad (A.P.)

Dr. Yu Takamine
Professor, Fafulty of Law & Letters,
University of Ryukyas,
Okinawa, (Japan).

Prashant Kshirsagar
Dept. of Marathi,
Vasant Mahavidyalaya
Kaij, Dist. Beed (M.S.)

Dr. D. Raja Reddy
Chairman, International Neuro Surjery
Association,
Banjara Hill, Hayderabad (A.P.)

Dr. A. H. Jamadar
Chairman, BOS Hindi,SRTMUN &
Head, Dept. of Hindi, BKD
College,Chakur, Dist. Latur (M.S.)

Dr. Shaikh Moinoddin G.
Dept. of Commerce,
Lal Bahadur Shastri College,
Dharmabad, Dist. Nanded(M. S.)

Scott A. Venezia
Director, School of Business,
Ensenada Campus,
California, (U.S.A.)

DEPUTY-EDITOR

Dr. N. G. Mali
Head, Dept. of Geography,
M. B. College,
Latur,Dist. Latur.(M.S.)

Dr. Babasaheb M. Gore
Principal,
Smt. S.D.D.M.College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

CO-EDITORS

Dr. V.J. Vilegave
Head, Dept. of P.A.,
Shri. Guru Buddhiswami College,
Purna, Dist. Parbhani (M.S.)

Dr. S.B. Wadekar
Dept. of Dairy Science,
Adarsh College,
Hingoli, Dist. Hingoli.(M.S.)

Dr. Omshiva V. Ligade
Head, Dept. of History
Shivjagruti College, Nalegaon,
Dist. Latur. (M.S.)

Dr. Shivanand M. Giri
Dept. of Marathi,
Bhai Kishanrao Deshmukh College,
Chakur Dist. Latur.(M.S.)

Issue : XXI, Vol. V
URA UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS
IMPACT FACTOR 6.10
ISSN 2229-4406
Sept. 2020 To Feb. 2021

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	Effect of Rare Earth Element Substituents (Pr^{3}+ and HO^{3}+) on Structural Parameters of Cobalt Ferrites, Synthesized by SolGel -Auto-combustionMethod **A. M. Pachpinde, M.M. Langade, K.S. Lohar**	1
2	The Concept of Traditional Knowledge and Intellectual Property Rights **Avinash D. Munde**	7
3	Current Trends in HRM **Sushen Narayam Maind**	10
4	Employee Attrition: Biggest Challenge For 21st Century Organizations **Gajendra S. Washnik**	14
5	A study of personal and social experiences of Mahatma Gandhi in My Experiments with Truth **Madhuri J. Dhiware**	18
6	प्रेमचन्द की कहानियों में दलित - पात्र **डॉ. महावीर रामजी हाके**	24
7	नाबार्डची उदिष्टये आणि ग्रामीण विकास : एक अभ्यास **डॉ. गिरिष मायी, डॉ. राजेंद्रकुमार आर. गव्हाळे**	29
8	नोकरी करणाऱ्या स्त्रियांच्या कुटुंबातील मुलांवर होणारा परिणाम : एक दृष्टीक्षेप **माला पुंडलिकराव बारापत्रे**	37
9	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांच्या साहित्यातील स्त्री **डॉ. तुषार चांदवडकर**	43
10	भारतीय अणुऊर्जेचा महान अणु उपासक : डॉ. होमी भाभा **डॉ. प्रकाश पानतावणे**	47
11	यलम समाजाची राजकीय स्थिती **डॉ. अनिल रेड्डी**	52
12	गांधीजींचे सत्याग्रहाबाबत विचार **डॉ. एस. एच. सकनुरे**	58

Issue : XXI, Vol . V
URA UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS
IMPACT FACTOR 6.10
ISSN 2229-4406
Sept. 2020 To Feb. 2021

6

प्रेमचन्द की कहानियों में दलित - पात्र

डॉ. महावीर रामजी हाके
हिंदी विभाग,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
गंगाखेड, जि. परभणी

Research Paper - Hindi

प्रेमचन्द की कहानियों का विश्व अति व्यापक है, जिसमें अमृतराय के अनुसार २२४ कहानियाँ समायी हुई है । 'मान सरोवर' के आठ भागों में विभक्त कहानियों में से केवल पंद्रह कहानियों में दलित - विवेचन आया है 'ठाकूर का कुआँ', 'सदगति', 'आग्य - पीछा', 'कफन', 'मंदिर', 'मंत्र-१', लांछन' और 'विध्वंस' में कहानियाँ ऐसी है, जो स्त्री, पुरुष, बुढे, बुढियों और बालक जैसे दलित-पात्रों की दशा की झाँकियाँ प्रस्तुत करती है ।

१) ठाकूर का कुआँ :-

इस कहानी में दो दलित पात्र आए है - एक पुरुष तो दूसरा नारी । जोखू पुरुष पात्र है और गंगी नारी पात्र । जोखू और गंगी निम्न जाति के पति-पत्नी हैं ।

समाज में बल और अर्थ अपना प्रभाव दिखाते हैं, जिसके सामने बेचारे गरीब दब जाते है । उनमें घातक प्रथाओ का विरोध करने की हिम्मत नही होती, फलत: रिवाजों के पालन में उनका दम निकल जाता है । नीच जाति का 'जोखू' कई दिनों से बीमार है । प्यास से उसका गला सूखा जा रहा है और उसकी पत्नी गंगी उसे सदा गंदा पानी पिलाना चाहती है । परंतु उसमें सख्त बदबू आने से मारे बास के उससे पानी नही पिया जाता । दलित होने से गंगी ठाकूर और साहू के कुओं पर पानी नही भर सकती । इस बहिष्कृतता की व्यथा जोखू के शब्दों में प्रकट हुई है, "गरीबों का दर्द कौन समझता है । हम तो मर भी जाते है, कोई दुआर पर झाँकने नही आता कँधा देना तो बडी बात है । ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे?"[१] जोखू के इन शब्दों में कडवा सत्य भरा है । आखिर उसे मैला गंदा पानी पीना पडता है । हिन्दुओं के द्वारा पाली हुई अस्पृश्यता से वह दब गया है ।

सामाजिक जाति व्यवस्था में निम्न जातियों को कोई पूछता नही है । उँच-नीच, वरिष्ठ, कनिष्ठ की कल्पना नीचों को समानता और अधिकारों से दूर रखती है । प्रतिदिन शाम को पानी लाने वाली 'गंगी' आज का लाया हुआ बदबूदार पानी जोखू को पीने को नही देती है । कूएँ से दूसरा

पानी लाकर देने के प्रयास में वह विद्रोही बन जाती है और रात को ठाकूर के कुएँ पर पहुँचती है । वह अपना कलेजा मजबूत करके घडा कुएँ में डाल देती है, परंतु एकाएक ठाकूर साहब का दरवाजा खुलने से उसके हाथ से रस्सी छूट जाती है और जगत से कुदकर वह भाग जाती है ।

अपने को उँचे और बडे समझने वाले लोगों के निन्दनीय काम से गंगी का विद्रोही दिल भडकता है और वह रिवाजों के विरोध में ठाकूर के कुएँ पर पानी भरने का धैर्य दिखाती है । इसमे उसमें एक और हिम्मत है, तो दूसरी ओर भय और आखिर भय के प्रभाव से उसकी हिम्मत टूट जाती है ।

२) गुल्लीडंडा :-

'गुल्लीडंडा' कहानी में 'गया' नामक केवल एक दलित पात्र का आयोजन हुआ है, जो जाति का चमार है । गया जाति से नीच होने पर भी थानेदार के बेटे ने उसे अस्पृश्य नही माना है । यह पात्र बालक और युवक के रुप में सामने आता है । शैशवावस्था में इसका स्वभाव जहाँ आक्रमक बन गया है, वहाँ वह युवावस्था में अधिक समझदार है ।

दुबला, काला और थानेदार के बेटे का हमजोली गया बचपन में विद्रोही है । गुल्ली डंडे के खेल में थानेदार के बेटे से अपना दाव लेने के लिए वह संघर्ष करके उसकी पीठ पर डंडा जमा देता है । अर्थात अन्याय के प्रति उसमें चिढ है । लेकिन युवावस्था में डिप्टी साहब का साईज हो जाने पर उसके स्वभाव में दब्बुपन आ चुका है । अपनी नीचता का ख्याल उसे नम्र, सरल और दब्बू बना देता है । थानेदार का बेटा जब इंजीनिअर होकर जिले का अफसर बनकर आता है, तब उसके खेल में गया का छोटापन गया को अत्यन्त सहनशील और तुच्छ बना देता है ।

प्रेमचन्द की दृष्टि में दलित तिरस्कृत और असमर्थ नही है । विविध परिस्थितियों ने उन्हे उस तर गढा है । इनमें भी कार्य कुशलता और समर्थता होती है, जो अवसर मिलने पर प्रकट होती है । गया आखिर एक दिन के खेल में अपनी कुशलता का खरा रंग दिखाकर थानेदार के बेटे को अपने बडप्पन का परिचय दे देता है ।

३) घास वाली :-

प्रस्तुत कहानी के दलित पात्र चमार जाति के पति-पत्नी है । घासवाली मुलियाँ चमारिन है । जिसके साथ उसकी सास का उल्लेख हुआ है, परंतु वह अनाम है । महावीर नाम का पुरुष पात्र मुलिया का पति है । कहानी के ये दलित-पात्र पारिवारिक है ।

परिस्थिति मनुष्य को गुलाम बनाती है और इस हालत में से बचने का कोई उपाय उसे ज्ञात नही रहता है । इससे उसका बेबस और लाचार मन कठिनाइयों से टकराने के आलावा प्रवाह प्रतित होता है । महावीर का जीवन इस प्रकार का है । लारी के सामने उसके इक्के को कोई पूछता नही है । अत: उसे बीस आने की मजदूरी नही मिलती है । इससे उसके सामने प्रश्न है क्या जानवर

को खिलाऊँ, क्या आप खाऊँ? उसके इक्के घोडे की दुर्दशा उसकी गरीबी का प्रतीक है - "मगर घोडा इतना दुबला हो रहा था, इक्के की गद्दी इतनी मैली और फटी हुई, सारा सामान इतना रद्दी कि चैनसिंह को उस पर बैठते शर्म आयी ।"[२]

इस तरह उसके शरीर पर साबित कपडा भी नही है । इससे उपर उठने के लिए दो चार बीघे की खेती करने का पौरुष भी उसमें नही है । अत: वह घास छीलकर बेचना पसन्द करता है ।

महावीर के प्रति चैनसिंह के मन में हमदर्दी होने से वह दयार्द्र होकर उससे कहता है - "मेरी एक सलाह है । तुम मुझसे एक रुपया रोज लिया करो । बस, जब मैं बुलाऊँ, तो इक्का लेकर चले आया करो ।"[३] इससे महावीर की आँखे सजल होती है ।

महावीर के स्वभाव में किसी तरह की उग्रता नही है । उसमें गरीबी से निम्नता का भाव उभरता है । वह चैनसिंह से कहता है - "मालिक आप ही का तो खाता हूँ । आपकी परजा हूँ । जब मरजी हो पकडवा मँगाइए ।"४ महावीर का वह उदगार उसकी लाचारी का उदाहरण है ।

दूसरी बार भी रास्ते में चैनसिंह के दर्शन से मुलिया डर जाती है । परन्तु वह उसे अवहेलनापूर्ण शब्दो में फटकारे बिना नही रहती है । मुलिया दलित है, लेकिन गिरी हुई नही है । वह अपने जीवन में पति के साथ कपट करना नही चाहती है । उकस पति पर विश्वास है । इसलिए वह रुप के दीवाने चैनसिंह से कहती है - "मैं चमारिन होकर भी इतनी नीच नही हूँ कि विश्वास का बदला खोट से दूँ ।"[५]

४) मुक्ति मार्ग :-

इस कहानी में दलितेत्तर पात्रों के साथ 'हरिहर' नामक चमार पुरुष पात्र अपनी क्षणिक झाँकी दिखाता है ।

जिस समाज में सवर्ण लोग दलितो का निर्दलन करते है, उस समाज में आतंकवादियों के खिलाफ किसी दलित का जाना सहज सम्भव नही होता । भय का संचार उसे सहनशील बना देता है । परंतु जिस तरह पाँचो उँगलियाँ समान नही होती, उसी तरह सभी दलित भीरु नही हो सकते, क्योंकि समय - चक्र के साथ किसी दलित में निर्भयता और क्रुरता की उपज सम्भव हो सकती है । स्वभाव-भिन्नता को नही टाला जा सकता । हरिहर ऐसा ही निर्भय और साहसी दलित व्यक्ति है ।

चमारों का बडा दुष्ट मुखिया हरिहर किसी का बुरा करने में कभी संकोच नही करता है । जिजसे सब किसान उससे थरथर काँपते है । झींगुर उसकी इस वृत्ति से लाभ उठाते के विचार में रहता है । बुद्धू को लक्ष्मी प्रसन्न होने से उसके घर कंचन बरसता है । इससे झींगुर की जलन बढती है और मन में बुद्धू के प्रति घृणा उत्पन्न करती है । परिणामत: हरिहर झींगुर के कहने में आकर

बुद्धू को सबक सिखाने का षडयंत्र रचता है इसके अनुसार झींगुर की बछिया बुद्धू को सबक सिखाने का षडयंत्र रचता है। इसके अनुसार झींगुर की बछिया बुद्धू की भेडों में चरने के लिए छोड दी जाती है, जिसें हरिहर कुछ खिलाकर मार डालता है। हरिहर की यह प्रवृत्ति बुद्धू के शब्दों में स्पष्ट झलकती है - "सी हरिहर ने मेरी दो गाएँ मार डाली। न जाने क्या खिला देता है।"[६] बुद्धू के विचार में चमार हत्यार है।

५) सदगति :

'सदगति' के दलित पात्रों में चमार जाति के दु:खी और झुरिया पति - पत्नी है। इनके अतिरिक्त गोंड जाति का एक पुरुष पात्र कहानी में अपनी क्षणिक झलक दिखा देता है। दु:खी झुरिया ग्राम में ब्राह्मण देवता के द्वारा शोषित अछुत है।

अन्ध विश्वास अज्ञान की एक देन है। जिसमें तर्कबुद्धि और सोचने की प्रवृत्ति नही होती, वह बडे अंध विश्वास के साथ हर प्रथा को प्रमाण समझता है। अज्ञान वश उस बात को उलट-पुलट कर देखने की जरुरत उसे कभी महसूस नही होती। इससे वह धोखा खाता है। दु:खी झुरिया में इस तरह के ढोंगी ब्राह्मण देवता के संदर्भ में होने वाले अन्ध-विश्वास से उनका जीवन दु:ख पूर्ण बनता है।

अंध - विश्वास से प्रभावित झुरिया की नजर में पंडित घासीराम नेमधरम से रहने वाले ब्राह्मण है, अत: वे चमार की खटोली पर बैठेंगे नही। दलित के साथ उसकी थाली को भी अस्पृश्य समझा जाना है। अत: जाता दु:खी ब्राह्मण के लिए सीधा थाली में नहीं पत्तल पर रखने की बात करता है; क्योंकि थाली में रखे सीधे को वे अस्वीकार करेंगे। अस्पृश्यता के कारण पत्तल को झुरिया का स्पर्श तक निषिद्ध है। आखिर दुखी की मृत्यु पर वह पण्डित के द्वार पर आकर सिर पीट-पीटकर रोने लगती है। परंतु उसका रुदन हवा में विलीन होता है।

अन्याय के प्रति मन में चिढ होने वाला 'गोंड' विद्रोही पात्र है। "कुछ खाने को मिला कि काम ही कराना जानते है। जाके माँगते क्यो नही?"[७] इस प्रश्न से दुखी में साहस उत्पन्न कराने का गोंड का प्रयास है वह पण्डित घासीराम के धर्मात्मा बनाने के ढोंग पर व्यंग्य करता है - "मूँछो पर ताव देकर भोजन किया और आराम से सोए, तुम्हे लकडी फोडने का हुक्म लगा दिया। जमींदार भी कुछ खाने को देता है। हाकिम भी बेगार लेता है, तो थेडी बहुत मंजूरी देता है। यह उनसे भी बढ गए, उसे पर धर्मात्मा बनते है।"[८]

झुरिया की सलाह के अनुसार दुखी बेटी की शादी के लिए साईन सगुन पूछने के लिए घास के गढ्ढे का नजराना लेकर पण्डित घासीराम के घर जाता है और उन्हे साष्टांग दण्डवत करके हाथ बाँधकर खडा होता है। वहाँ उसे बेगार में जो काम करना पडता है, वह उनकी जान लेकर ही बन्द होता है।

ब्राह्मण मृत दुखी चमार की लाश कैसे उठाते? इसलिए पण्डित ने चमारों को धमकाया, पर कोई भी लाश उठाने नहीं आता है। अतयव पंडित मुर्दे के पैर में रस्सी का फन्दा डालकर उसे घसीटते - घसीटते गाँव के बाहर फेंक देते है।

दलित दुखी का यह दु:खद अन्त जाति व्यवस्था, अस्पृश्यता का परिणाम है। मानवता पर लगा हुआ कलंक है।

प्रेमचन्द ने अपनी कहानी साहित्य में जिन दलित - पात्रों को जन्म दिया है, वे सभी अज्ञानी, अशिक्षित तथा अन्धश्रद्धा और परम्परा के बोझ को उठाने वाले दरिद्री जन है। उनमें सहनशीलता है, लेकिन पीडा की अतिवेदना अन्ततः उन्हे मुखर बनाती है। प्रेमचन्द के ये सभी पात्र चमार, मेहतर भंगी गोंड और भील जातियों का प्रतिनिधित्व करते है। इनमें चमार जाति के पात्र अधिक है।

प्रेमचन्द की कहानियों के ये पात्र भले ही परिस्थितियों के दास जैसे क्यो न हों, फिर भी दबाव अन्याय, अत्याचार को हटा देने की दिशा में उनमें धैर्य, क्षोभ और असंतोष पनप रहा है।

संदर्भ संकेत :-

१) प्रेमचन्द - मानसरोवर भाग - १ पृ. १४१
२) वही पृ. ३१३
३) वही पृ. ३१६
४) वही पृ. ३१०
५) वही पृ. ३१६
६) वही पृ. २४८
७) प्रेमचन्द - मानसरोवर भाग पृ. २२
८) वही पृ. २२